इबादत

मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी (रह.)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।"

इबादत

मैं आपके सामने इबादत लफ़्ज़ की तशरीह करूँगा जिसे मुसलमान आम तौर पर बोलते हैं, मगर बहुत कम आदमी इसका सही मतलब जानते हैं।

अल्लाह तआला ने अपनी पाक किताब में बयान किया है—

"मैंने जिन्न और इनसान को इसके सिवा और किसी काम के लिए पैदा नहीं किया है कि वे मेरी बन्दगी करें।"

(कुरआन, 51:56)

इस आयत से मालूम हुआ कि आपकी पैदाइश और आपकी ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह की इबादत के सिवा और कुछ नहीं है। अब आप अन्दाज़ा कर सकते हैं कि इबादत का मतलब जानना आपके लिए कितना ज़रूरी है। अगर आप इसके सही मानी से नावाक़िफ़ होंगे तो मानो उस मक़सद ही को पूरा न कर सकेंगे जिसके लिए आपको पैदा किया गया है, और जो चीज़ अपने मक़सद क़ो पूरा नहीं करती वह नाकाम होती है। डॉक्टर अगर मरीज़ को अच्छा न कर सके तो कहते हैं कि वह इलाज में नाकाम हुआ। किसान अगर फ़सल पैदा न कर सके तो कहते हैं कि वह खेती में नाकाम हुआ। इसी तरह अगर आप अपनी ज़िन्दगी के असूल मक़सद यानी 'इबादत' को पूरा न कर सके तो कहना चाहिए कि आपकी सारी ज़िन्दगी ही नाकाम हो गई। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप पूरे ध्यान से इबादत का मतलब सुनें और समझें और उसे अपने दिल में जगह दें, क्योंकि इसी पर आपकी ज़िन्दगी के कामयाब या नाकाम होने का दारोमदार है।

इबादत का मतलब

इबादत का लफ़्ज़ 'अब्द' से निकला है। अब्द के मानी 'बन्दे और ग़ुलाम' के हैं। इसलिए इबादत के मानी 'बन्दगी और ग़ुलामी' के हुए। जो शख़्स किसी का बन्दा हो, अगर वह उसकी ख़िदमत में बन्दा बनकर रहे और उसके साथ इस तरह पेश आए जिस तरह मालिक के साथ पेश आना चाहिए तो यह बन्दगी और इबादत है। इसके ख़िलाफ़ जो शख़्स किसी का बन्दा हो और मालिक से तनख़्वाह भी पूरी-पूरी वुसूल करता हो मगर मालिक के सामने बन्दों की तरह काम न करे तो इसे नाफ़रमानी और सरकशी कहा जाता है। बल्कि ज़्यादा सही लफ़्ज़ों में इसे नमकहरामी कहते हैं।

अब ग़ौर कीजिए कि मालिक के मुक़ाबिले में बन्दों का-सा तरीक़ा इख़्तियार करने की सूरत क्या है?

बन्दे का पहला काम यह है कि मालिक ही को मालिक समझे और यह ख़याल करे कि जो मेरा मालिक है, जो मुझे रोज़ी देता है, जो मेरी हिफ़ाज़त और निगहबानी करता है, उसी की वफ़ादारी मुझपर फ़र्ज़ है। उसके सिवा और कोई इसका हक़ नहीं रखता कि मैं उसकी वफ़ादारी करूँ।

बन्दे का दूसरा काम यह है कि हर वक़्त मालिक का कहा माने, उसके हुक्मों को पूरा करे, कभी उसकी ख़िदमत से मुँह न मोड़े और मालिक की मरज़ी के ख़िलाफ़ न ख़ुद अपने दिल से कोई काम करे, न किसी दूसरे शख़्स की बात माने। ग़ुलाम हर वक़्त, हर हाल में ग़ुलाम है। उसे यह कहने का हक़ ही नहीं कि मालिक की फ़ुलाँ बात मानूँगा और फ़ुलाँ बात न मानूँगा या इतनी देर के लिए मैं मालिक व आक़ा का ग़ुलाम हूँ और बाक़ी वक़्त में उसकी ग़ुलामी से आज़ाद हूँ।

बन्दे का तीसरा काम यह है कि मालिक का अदब और उसकी इज़्ज़त करे। जो तरीक़ा अदब और इज़्ज़त करने का मालिक ने मुक़र्रर किया हो उसकी पैरवी करे, जो वक़्त सलामी के लिए हाज़िर होने का मालिक ने मुक़र्रर किया हो उस वक़्त ज़रूर हाज़िर हो और इस बात का सुबूत दे कि वह उसकी वफ़ादारी और इताअत में साबित क़दम है।

बस यही तीन चीज़ें हैं जिनसे मिलकर इबादत बनती है। एक मालिक की वफ़ादारी, दूसरे मालिक की इताअत और तीसरे उसका अदब और उसकी ताज़ीम। अल्लाह तआला ने जो यह फ़रमाया कि :

"मैंने जिन्न और इनसानों को इसलिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत करें।" (क़ुरआन, 51:56)

तो इसका मतलब दरअस्ल यह है कि अल्लाह तआला ने जिन्नों और इनसानों को इसलिए पैदा किया है कि वे सिर्फ़ अल्लाह के वफ़ादार हों, उसके ख़िलाफ़ किसी और के वफ़ादार न हों। सिर्फ़ अल्लाह के हुक्मों की इताअत करें, उसके ख़िलाफ़ किसी और का हुक्म न मानें और सिर्फ़ उसके आगे अदब और ताज़ीम से सिर झुकाएँ, किसी दूसरे के आगे सिर न झुकाएँ। इन्हीं तीन चीज़ों को अल्लाह ने 'इबादत' के जामेअ लफ़्ज़ में बयान किया है। यही मतलब उन तमाम आयतों का है जिनमें अल्लाह ने अपनी इबादत का हुक्म दिया है। हमारे प्यारे नबी *(सल्ल.)* और आपसे पहले जितने नबी *(अलैहि.)* ख़ुदा की तरफ़ से आए हैं, उन सबकी तालीम का सारा निचोड़ यही है–

"अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो।"

(क़ुरआन; 17 : 23)

यानी सिर्फ़ एक बादशाह है जिसका तुम्हें वफ़ादार होना चाहिए, और वह बादशाह 'अल्लाह' है। सिर्फ़ एक क़ानून है जिसकी तुम्हें

पैरवी करनी चाहिए, और वह क़ानून 'अल्लाह का क़ानून' है, और सिर्फ़ एक ही हस्ती ऐसी है जिसकी तुम्हें पूजा और परस्तिश करनी चाहिए और वह हस्ती अल्लाह की है।

इबादत के ग़लत मफ़हूम के नतीजे

इबादत का यह मतलब अपने दिमाग़ में रखिए और फिर ज़रा मेरे सवालों का जवाब देते जाइए।

आप उस नौकर के बारे में क्या कहेंगे जो मालिक की मुक़र्रर की हुई ड्यूटी पर जाने के बजाय हर वक़्त बस उसके सामने हाथ बाँधे खड़ा रहे और लाखों बार उसका नाम जपता चला जाए? मालिक इससे कहता है कि जाकर फ़ुलाँ-फ़ुलाँ लोगों के हक़ अदा कर, मगर यह जाता नहीं, बल्कि वहीं खड़े-खड़े मालिक को झुक-झुककर दस सलाम करता है और फिर हाथ बाँधकर खड़ा हो जाता है। मालिक उसे हुक्म देता है कि जा फ़ुलाँ-फ़ुलाँ ख़राबियों को मिटा दे, मगर वह एक इंच वहाँ से नहीं हटता और सजदे पर सजदे किए चला जाता है। मालिक हुक्म देता है कि चोर का हाथ काट दे। यह हुक्म सुनकर बस वहीं खड़े-खड़े बहुत सुरीली आवाज़ से 'चोर का हाथ काट दे', 'चोर का हाथ काट दे' बीसियों बार पढ़ता रहता है, मगर एक बार भी हुकूमत का ऐसा निज़ाम क़ायम करने की कोशिश नहीं करता जिसमें चोर का हाथ काटा जा सके। क्या आप कह सकते हैं कि यह आदमी वाक़ई मालिक की बन्दगी कर रहा है? अगर आपका कोई नौकर यह तरीक़ा अपनाए तो मैं जानता हूँ कि आप उसे क्या कहेंगे। मगर हैरत आप पर कि ख़ुदा का जो नौकर ऐसा करता है आप उसे बड़ा इबादतगुज़ार कहते हैं! यह ज़ालिम सुबह से शाम तक ख़ुदा जाने कितनी बार क़ुरआन शरीफ़ में ख़ुदा के हुक्मों को पढ़ता है, मगर उन हुक्मों को पूरा करने के लिए अपनी जगह से हिलता तक नहीं, बल्कि

नफ़्ल-पर-नफ़्ल पढ़े जाता है, हज़ार दाना तसबीह पर ख़ुदा का नाम जपता है और सुरीली आवाज़ में क़ुरआन की तिलावत करता रहता है। आप उसकी ये हरकतें देखते हैं और कहते हैं कि कैसा ज़ाहिद और आबिद बन्दा है! यह ग़लतफ़हमी सिर्फ़ इस वजह से है कि आप इबादत का सही मतलब नहीं जानते।

एक और नौकर है जो रात-दिन ड्यूटी तो दूसरों की अंजाम देता है, हुक्म दूसरों का सुनता और मानता है, दूसरों के क़ानून पर चलता है और अपने असल मालिक के फ़रमान की हर वक़्त ख़िलाफ़वर्ज़ी किया करता है, मगर सलामी के वक़्त मालिक के सामने हाज़िर हो जाता है और ज़बान से मालिक का ही नाम जपता रहता है। अगर आप में से किसी शख़्स का नौकर यह तरीक़ा अपनाए तो आप क्या करेंगे? क्या आप उसकी सलामी को उसके मुँह पर न मार देंगे? जब वह ज़बान से आपको आक़ा और मालिक कहेगा तो क्या आप फ़ौरन यह जवाब न देंगे कि तू परले दर्जे का झूठा और बेईमान है, तनख़ाह मुझसे लेता है और नौकरी दूसरों की करता है, ज़बान से मुझे मालिक कहता है और हक़ीक़त में ग़ैरों की ख़िदमत करता फिरता है? यह तो एक मामूली अक़्ल की बात है जिसे आपमें से हर शख़्स समझ सकता है। मगर कैसी हैरत की बात है कि जो लोग रात-दिन ख़ुदा के क़ानून को तोड़ते हैं, काफ़िरों और मुशरिकों के कहने पर चलते हैं और अपनी ज़िन्दगी के मामलों में ख़ुदा के हुक्म की कोई परवाह नहीं करते उनकी नमाज़ और रोज़े और तसबीह और तिलावते-क़ुरआन और हज व ज़कात को आप ख़ुदा की इबादत समझते हैं। यह ग़लतफ़हमी भी इसी वजह से है कि आप इबादत के असल मतलब को नहीं जानते हैं।

एक और नौकर की मिसाल लीजिए। मालिक ने अपने नौकरों के लिए जो वर्दी मुक़र्रर की है, नौकर ठीक उसी नाप-तौल के साथ उस वर्दी को पहनता है, बड़े अदब और ताज़ीम के साथ मालिक

की ख़िदमत में हाज़िर होता है, हर हुक्म को सुनकर कहता है कि 'आपका हुक्म सर आँखों पर', और यह बात वह इस तरह कहता है कि मानो उससे बढ़कर हुक्म माननेवाला नौकर कोई नहीं। सलामी के वक़्त सबसे आगे जाकर खड़ा होता है और मालिक का नाम जपने में तमाम नौकरों से बाज़ी ले जाता है। मगर दूसरी तरफ़ वही नौकर मालिक के दुश्मनों और बाग़ियों की ख़िदमत बजा लाता है, मालिक के ख़िलाफ़ उनकी साज़िशों में हिस्सा लेता है और मालिक के नाम को दुनिया से मिटाने में जो कोशिश भी वे करते हैं उसमें यह कमबख़्त उनका साथ देता है। रात के अँधेरे में तो मालिक के घर में सेंध लगाता है और सुबह बड़े वफ़ादार नौकरों की तरह हाथ बाँधकर मालिक की सेवा में हाज़िर हो जाता है। ऐसे नौकर के बारे में आप क्या कहेंगे? यही ना कि वह मुनाफ़िक़ है, बाग़ी है, नमकहराम है। मगर ख़ुदा के जो नौकर ऐसे हैं उनको आप क्या कहा करते हैं?— किसी को 'पीर साहब' और किसी को 'हज़रत मौलाना' और किसी को 'दीनदार', 'मुत्तक़ी' और 'इबादतगुज़ार'। यह सिर्फ़ इसलिए कि आप उनके मुँह पर पूरे नाप की दाढ़ियाँ देखकर, उनके टख़नों से दो-दो इंच ऊँचे पाजामे देखकर, उनके माथों पर नमाज़ के गट्टे देखकर और उनकी लम्बी-लम्बी नमाज़ें और मोटी-मोटी तसबीहें देखकर समझते हैं कि बड़े दीनदार और इबादतगुज़ार हैं। यह ग़लतफ़हमी भी इसी वजह से है कि आपने इबादत और दीनदारी का मतलब ही ग़लत समझा है।

आप समझते हैं कि हाथ बाँधकर क़िबले की तरफ़ मुँह करके खड़ा होना, घुटनों पर हाथ रखकर झुकना, ज़मीन पर हाथ टेककर सजदा करना और कुछ मुक़र्रर लफ़्ज़ ज़बान से अदा करना बस यही थोड़े-से काम और हरकात ही इबादत हैं। आप समझते हैं कि रमज़ान की पहली तारीख़ से शव्वाल का चाँद निकलने तक रोज़ाना सुबह से शाम तक भूखे-प्यासे रहने का नाम इबादत है, आप

समझते हैं कि क़ुरआन के कुछ रुकूअ ज़बान से पढ़ देने का नाम इबादत है; आप समझते हैं कि मक्का शरीफ़ जाकर काबा के गिर्द तवाफ़ करने का नाम इबादत है। ग़रज़ आपने कुछ कामों की ज़ाहिरी शक्लों का नाम इबादत रख छोड़ा है, और जब कोई शख़्स इन शक्लों के साथ इन कामों को पूरा कर लेता है तो आप ख़याल करते हैं कि उसने ख़ुदा की इबादत कर ली और, "मैंने जिन्न और इनसानों को इसके सिवा किसी और ग़रज़ के लिए पैदा नहीं किया कि वे मेरी इबादत करें" (51 : 56)

—का मक़सद पूरा हो गया। अब वह अपनी ज़िन्दगी में आज़ाद है कि जो चाहे करे।

इबादत — पूरी ज़िन्दगी में बन्दगी

लेकिन असूल हक़ीक़त यह है कि अल्लाह ने जिस इबादत के लिए आपको पैदा किया है और जिसका आपको हुक्म दिया है वह कुछ और ही चीज़ है। वह इबादत यह है कि आप अपनी ज़िन्दगी में हर वक़्त, हर हाल में ख़ुदा के क़ानून पर चलें और हर उस क़ानून की पाबन्दी से आज़ाद हो जाएँ जो अल्लाह के क़ानून के ख़िलाफ़ हो। आपकी हर सरगर्मी उस हद के अन्दर हो जो ख़ुदा ने आपके लिए मुक़र्रर की है। आपका हर काम उस तरीक़े के मुताबिक़ हो जो ख़ुदा ने बता दिया है। इस ढंग से जो ज़िन्दगी आप बिताएँगे, वह पूरी की पूरी इबादत होगी। ऐसी ज़िन्दगी में आपका सोना भी इबादत है और जागना भी, खाना भी इबादत है और पीना भी, चलना-फिरना भी इबादत है और बात करना भी, यहाँ तक कि बीवी के पास जाना और अपने बच्चों को प्यार करना भी इबादत है। जिन कामों को आप बिल्कुल दुनियादारी कहते हैं वे सब दीनदारी और इबादत हैं। अगर आप इनको अंजाम देने में ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई हदों का लिहाज़ करें और ज़िन्दगी में हर-हर

क़दम पर यह देखकर चलें कि ख़ुदा के नज़दीक जाइज़ क्या है और नाजाइज़ क्या, हलाल क्या है और हराम क्या, फ़र्ज़ क्या चीज़ की गई है और मना किस चीज़ से किया गया है, किस चीज़ से ख़ुदा ख़ुश होता है और किस चीज़ से नाराज़ होता है? मसलन आप रोज़ी कमाने के लिए निकलते हैं। इस काम में बहुत-से मौक़े ऐसे भी आते हैं जिनमें हराम का माल काफ़ी आसानी के साथ आपको मिल सकता है। अगर आपने ख़ुदा से डरकर वह माल न लिया और सिर्फ़ हलाल की रोटी कमाकर लाए तो यह जितना वक़्त आपने रोटी कमाने में ख़र्च किया, यह सब इबादत था और यह रोटी घर लाकर जो आपने ख़ुद खाई और बीवी, बच्चों और ख़ुदा के बताए हुए दूसरे हक़दारों को खिलाई, इस सबपर आप अज्र व सवाब के हक़दार हो गए। आपने अगर रास्ता चलने में पत्थर या काँटा हटा दिया, इस ख़याल से कि ख़ुदा के बन्दों को तकलीफ़ न पहुँचे तो यह भी इबादत है। आपने अगर बीमार की ख़िदमत की या किसी अन्धे को रास्ता चलाया या किसी मुसीबत के मारे हुए की मदद की तो यह भी इबादत है। आपने अगर बातचीत करने में झूठ से, ग़ीबत से, गाली बकने और दिल दुखाने से परहेज़ किया और ख़ुदा से डरकर सिर्फ़ हक़ बात की, तो जितना वक़्त आपने बातचीत में गुज़ारा वह सब इबादत में लगा।

इसलिए ख़ुदा की असली इबादत यह है कि होश सँभालने के बाद से मरते दम तक आप ख़ुदा के क़ानून पर चलें और उसके हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारें। इस इबादत के लिए कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है। यह इबादत हर वक़्त होनी चाहिए। इस इबादत के लिए कोई एक शक्ल नहीं है, हर काम और हर शक्ल में उसी की इबादत होनी चाहिए। जब आप यह नहीं कह सकते कि मैं फ़ुलाँ वक़्त ख़ुदा का बन्दा हूँ और फ़ुलाँ वक़्त उसका बन्दा नहीं हूँ, तो आप यह भी नहीं कह सकते कि फ़ुलाँ वक़्त उसकी बन्दगी और

इबादत के लिए है और फुलाँ वक़्त उसकी इबादत और बन्दगी के लिए नहीं है।

भाइयो! आपको इबादत का मतलब मालूम हो गया और यह भी मालूम हो गया कि ज़िन्दगी में हर वक़्त और हर हाल में ख़ुदा की बन्दगी और उसके हुक्म पर चलने का नाम ही 'इबादत' है। अब आप पूछेंगे कि यह नमाज़, रोज़ा और हज वग़ैरह क्या चीज़ें हैं? इसका जवाब यह है कि अस्ल में इबादतें जो अल्लाह ने आप पर फ़र्ज़ की हैं, उनका मक़सद आपको उस बड़ी इबादत के लिए तैयार करना है जो आपको ज़िन्दगी में हर वक़्त हर हाल में अदा करनी चाहिए। नमाज़ आपको दिन में पाँच वक़्त याद दिलाती है कि तुम अल्लाह के बन्दे हो, उसी की बन्दगी तुम्हें करनी चाहिए। रोज़ा साल में एक बार और पूरे एक महीने तक आपको इसी बन्दगी के लिए तैयार करता है। ज़कात आपको बार-बार ध्यान दिलाती है कि यह माल जो तुमने कमाया है, यह ख़ुदा की देन है। इसको सिर्फ़ अपने मन की ख़ाहिशों पर ख़र्च न करो, बल्कि अपने मालिक का हक़ अदा करो। हज दिल पर ख़ुदा की मुहब्बत और उसकी बड़ाई का ऐसा नक़्श बिठाता है कि एक बार अगर वह बैठ जाए तो सारी ज़िन्दगी इसका असर दिल से दूर नहीं हो सकता। इन सब इबादतों को अदा करने के बाद अगर आप इस लायक़ हो गए कि आपकी सारी ज़िन्दगी ख़ुदा की इबादत बन जाए तो बेशक आपकी नमाज़, नमाज़ है और रोज़ा, रोज़ा है; ज़कात, ज़कात है और हज, हज है। लेकिन अगर यह मक़सद पूरा न हुआ तो सिर्फ़ रुकूअ् और सज्दा करने और भूख-प्यास के साथ दिन गुज़ारने और हज की रस्में अदा करने और ज़कात की रक़म निकाल देने से कुछ हासिल नहीं। इन ज़ाहिरी तरीक़ों की मिसाल तो ऐसी है जैसे एक जिस्म, अगर उसमें जान है, वह चलता-फिरता है और काम करता है तो बेशक एक ज़िन्दा इनसान है, लेकिन अगर उसमें जान ही

नहीं तो वह एक मुर्दा-लाश है। मुर्दे के हाथ, पाँव, आँख, नाक सब कुछ होते हैं मगर उसमें जान ही नहीं होती, इसलिए आप उसे मिट्टी में दबा देते हैं। इसी तरह अगर नमाज़ के अरकान पूरे अदा हों या रोज़े की शर्तें पूरी अदा कर दी जाएँ, मगर ख़ुदा का डर, उसकी मुहब्बत और उसकी वफ़ादारी व इताअत न हो, जिसके लिए नमाज़ और रोज़ा फ़र्ज़ किया गया है, तो वह भी एक बेजान चीज़ होगी।

नमाज़

भाइयो! इस्लाम में जो इबादतें फ़र्ज़ की गई हैं उनके बारे में मैं आपको बताऊँगा कि ये इबादतें किस तरह आदमी को उस बड़ी और असली इबादत के लिए तैयार करती हैं जिसके लिए अल्लाह ने जिन्न और इनसान को पैदा किया है। इस सिलसिले में सबसे बड़ी और सबसे अहम चीज़ नमाज़ है और आज के ख़ुतबे में सिर्फ़ इसी के बारे में आपसे कुछ बयान करूँगा।

इबादत का असूल मफ़हूम

यह तो आपको मालूम हो चुका है कि इबादत असूल में बन्दगी को कहते हैं। और जब आप ख़ुदा के बन्दे ही पैदा हुए हैं तो आप किसी वक़्त, किसी हाल में भी उसकी बन्दगी से आज़ाद नहीं हो सकते। जिस तरह आप यह नहीं कह सकते कि मैं इतने घण्टे या इतने मिनटों के लिए ख़ुदा का बन्दा हूँ और बाक़ी वक़्त में मैं उसका बन्दा नहीं इसी तरह आप यह भी नहीं कह सकते कि मैं इतना वक़्त ख़ुदा की इबादत में लगाऊँगा और बाक़ी वक़्तों में मुझे आज़ादी है कि जो चाहूँ करूँ। आप तो ख़ुदा के पैदाइशी ग़ुलाम हैं। उसने आपको बन्दगी ही के लिए पैदा किया है। इसलिए आपकी सारी ज़िन्दगी उसकी बन्दगी में गुज़रनी चाहिए और कभी एक लम्हे के लिए भी आपको उसकी इबादत से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए।

यह भी मैं आपको बता चुका हूँ कि इबादत के मानी दुनिया के काम-काज से अलग होकर एक कोने में बैठ जाने और अल्लाह-अल्लाह करने के नहीं हैं, बल्कि हक़ीक़त में इबादत के मानी यह हैं कि इस दुनिया में आप जो कुछ भी करें, ख़ुदा के

क़ानून के मुताबिक़ करें। आपका सोना और जागना, आपका खाना और पीना, आपका चलना और फिरना, ग़रज़ कि सब कुछ ख़ुदा के क़ानून की पाबन्दी में हो। आप जब अपने घर में बीवी-बच्चों, भाई-बहनों और रिश्तेदारों के पास हों तो उनके साथ इस तरह पेश आएँ, जिस तरह ख़ुदा ने हुक्म दिया है। जब अपने दोस्तों में हँसे और बोलें, उस वक़्त भी आपको ख़याल रहे कि हम ख़ुदा की बन्दगी से आज़ाद नहीं हैं। जब आप रोज़ी कमाने के लिए निकलें और लोगों से लेन-देन करें, उस वक़्त भी एक-एक बात और एक-एक काम में ख़ुदा के हुक्मों का ख़याल रखें और कभी उस हद से आगे न बढ़ें जो ख़ुदा ने मुक़र्रर कर दी है। जब आप रात के अँधेरे में हों और कोई गुनाह इस तरह कर सकते हों कि दुनिया में कोई आपको देखनेवाला न हो उस वक़्त भी आपको याद रहे कि ख़ुदा आपको देख रहा है और हक़ीक़त में डर उसी का होना चाहिए न कि दुनिया के लोगों का। जब आप जंगल में अकेले जा रहे हों और वहाँ कोई जुर्म इस तरह कर सकते हों कि किसी पुलिसमैन और किसी गवाह का खटका न हो तो उस वक़्त भी आप ख़ुदा को याद करके डर जाएँ और जुर्म से हाथ खींच लें। जब आप झूठ, बेईमानी और ज़ुल्म से बहुत-सा नफ़ा कमा सकते हों और कोई आपको रोकनेवाला न हो तो उस वक़्त भी आप ख़ुदा से डरें और उस फ़ायदे को इसलिए छोड़ दें कि ख़ुदा इससे नाराज़ होगा। और जब सच्चाई और ईमानदारी में आपको सरासर नुक़सान पहुँच रहा हो, उस वक़्त भी आप नुक़सान उठाना क़बूल कर लें, सिर्फ़ इसलिए कि ख़ुदा इससे ख़ुश होगा। इस तरह सिर्फ़ दुनिया को छोड़कर कोनों और गोशों में जा बैठना और तसबीह हिलाना इबादत नहीं है, बल्कि दुनिया के धंधों में फँसकर ख़ुदा के क़ानून की पाबन्दी करना इबादत है। अल्लाह के ज़िक्र का मतलब यह नहीं है कि ज़बान पर अल्लाह-अल्लाह जारी हो, बल्कि असल अल्लाह का ज़िक्र यह है कि दुनिया के झगड़ों और बखेड़ों में फँसकर भी आपको हर वक़्त ख़ुदा

याद रहे। जो चीज़ें ख़ुदा से ग़ाफ़िल करनेवाली हैं उनमें मश्ग़ूल हों और फिर ख़ुदा से ग़ाफ़िल न हों। दुनिया की ज़िन्दगी में जहाँ ख़ुदाई क़ानून को तोड़ने के बहुत-से मौक़े बड़े-बड़े फ़ायदों के लालच और नुक़सान का डर लिए हुए आते हैं, वहाँ आप ख़ुदा को याद करें और उसके क़ानून की पैरवी पर क़ायम रहें। यह है असली ख़ुदा की याद। इसका नाम है ज़िक्रे-इलाही। इसी ज़िक्र की तरफ़ क़ुरआन मजीद में इशारा किया गया है—

> "जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद करते रहो, शायद कि तुम्हें कामयाबी नसीब हो।"
>
> (क़ुरआन, 62:10)

नमाज़ के फ़ायदे

इबादत का यह मतलब दिमाग़ में रखिए और ग़ौर कीजिए कि इतनी बड़ी इबादत अंजाम देने के लिए किन-किन चीज़ों की ज़रूरत है और नमाज़ किस तरह ये सब चीज़ें इनसान में पैदा करती है?

बन्दगी का एहसास

सबसे पहले तो इस बात की ज़रूरत है कि आपको बार-बार यह याद दिलाया जाता रहे कि आप ख़ुदा के बन्दे हैं और उसी की बन्दगी आपको हर वक़्त, हर काम में करनी है। यह याद दिलाने की ज़रूरत इसलिए है कि एक शैतान आदमी के नफ़्स में बैठा हुआ है जो हर वक़्त कहता रहता है कि तू मेरा बन्दा है। और लाखों-करोड़ों शैतान हर तरफ़ दुनिया में फैले हुए हैं और उनमें से हर एक यही कह रहा है कि तू मेरा बन्दा है। इन शैतानों का जादू उस वक़्त तक नहीं उतर सकता जब तक इनसान को दिन में कई-कई बार यह याद न दिलाया जाए कि तू किसी का बन्दा नहीं,

सिर्फ़ ख़ुदा का बन्दा है। यही काम नमाज़ करती है। सुबह उठते ही सब कामों से पहले वह आपको यही बात याद दिलाती है। फिर जब आप दिन को अपने काम-काज में लगे होते हैं, उस वक़्त फिर तीन बार उसी याद को ताज़ा करती है। और जब आप रात को सोने के लिए जाते हैं तो आख़िरी बार फिर उसी को दोहराती है। यह नमाज़ का पहला फ़ायदा है और क़ुरआन में इसी वजह से नमाज़ को ज़िक्र कहा गया है, यानी यह ख़ुदा की याद है।

फ़र्ज़-शनासी

फिर चूँकि आपको इसी ज़िन्दगी में हर क़दम पर ख़ुदा के हुक्मों को बजा लाना है, इसलिए यह भी ज़रूरी है कि आपमें अपना फ़र्ज़ पहचानने की ख़ूबी पैदा हो और इसके साथ आपको अपना फ़र्ज़ मुस्तैदी से अंजाम देने की आदत भी हो। जो शख़्स यह जानता ही न हो कि फ़र्ज़ का मतलब क्या है, वह तो कभी हुक्मों को पूरा कर ही नहीं सकता। और जो शख़्स फ़र्ज़ के माने तो जानता हो मगर उसकी तरबियत इतनी ख़राब हो कि फ़र्ज़ को फ़र्ज़ जानने के बावजूद वह उसे अदा करने की परवाह न करे उससे कभी यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि रात-दिन के चौबीस घण्टों में जो हज़ारों हुक्म उसे दिए जाएँगे उनको मुस्तैदी से अंजाम देगा।

इताअत की मश्क़

जिन लोगों को फ़ौज या पुलिस में नौकरी करने का मौक़ा मिला है वे जानते हैं कि इन दोनों नौकरियों में ड्यूटी को समझने और उसे अदा करने की मश्क़ (Excercise) किस तरह कराई जाती है। रात-दिन में कई-कई बार बिगुल बजाया जाता है। सिपाहियों को एक जगह हाज़िर होने का हुक्म दिया जाता है और उनसे परेड कराई जाती है। यह सब इसलिए है कि उनको हुक्म बजा लाने की आदत हो, और उनमें से जो लोग ऐसे सुस्त और नालायक़ हों कि

बिगुल की आवाज़ सुनकर भी घर में बैठे रहें या परेड में हुक्म के मुताबिक़ हरकत न करें, उन्हें पहले ही नाकारा समझकर नौकरी से अलग कर दिया जाए।

ठीक इसी तरह नमाज़ भी दिन में पाँच वक़्त बिगुल बजाती है, ताकि अल्लाह के सिपाही उसको सुनकर हर तरफ़ से दौड़े चले आएँ और साबित करें कि वे अल्लाह के हुक्मों को मानने के लिए तैयार हैं। जो मुसलमान इस बिगुल को सुनकर भी बैठा रहता है और अपनी जगह से नहीं हिलता वह अस्ल में यह साबित करता है कि वह या तो फ़र्ज़ को पहचानता ही नहीं या अगर पहचानता है तो वह इतना नालायक़ और नाकारा है कि ख़ुदा की फ़ौज में रहने के क़ाबिल नहीं।

इसी लिए नबी *(सल्ल.)* ने फ़रमाया कि जो लोग अज़ान की आवाज़ सुनकर अपने घरों से नहीं निकलते, मेरा जी चाहता है कि जाकर उनके घरों में आग लगा दूँ। और यही वजह है कि हदीस में नमाज़ को कुफ़्र और इस्लाम के बीच फ़र्क़ करनेवाली बताया गया है। नबी *(सल्ल.)* और सहाबा *(रज़ि.)* के ज़माने में कोई ऐसा शख़्स मुसलमान ही नहीं समझा जाता था जो नमाज़ के लिए जमाअत में हाज़िर न होता हो, यहाँ तक कि मुनाफ़िक़ लोग भी, जिन्हें इस बात की ज़रूरत होती थी कि उनको मुसलमान समझा जाए, ऐसा करने पर मजबूर होते थे कि जमाअत से नमाज़ पढ़ें। यही वजह है कि क़ुरआन में जिस चीज़ पर मुनाफ़िक़ों को मलामत की गई है वह यह नहीं है कि वे नमाज़ नहीं पढ़ते, बल्कि यह है कि हारे हुए जी से बड़ी बददिली के साथ नमाज़ के लिए उठते हैं—

"और जब ये नमाज़ के लिए उठते हैं तो कसमसाते हुए सिर्फ़ लोगों को दिखाने के लिए उठते हैं।"

(क़ुरआन, 4:142)

इससे मालूम हुआ कि इस्लाम में किसी ऐसे शख़्स के मुसलमान समझे जाने की गुंजाइश नहीं है जो नमाज़ न पढ़ता हो, इसलिए कि इस्लाम सिर्फ़ अक़ीदा रखनेवाली चीज़ नहीं है, बल्कि अमली चीज़ है, और अमली चीज़ भी ऐसी कि ज़िन्दगी में हर वक़्त, हर पल एक मुसलमान को इस्लाम पर अमल करने और कुफ़्र व फ़िस्क़ से लड़ने की ज़रूरत है। ऐसी ज़बरदस्त अमली ज़िन्दगी के लिए ज़रूरी है कि मुसलमान ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करने के लिए हर वक़्त मुस्तैद हों। जो शख़्स इस क़िस्म की मुस्तैदी नहीं रखता, वह इस्लाम के लिए बिलकुल नाकारा है। इसी लिए दिन में पाँच वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ की गई, ताकि जो लोग मुसलमान होने का दावा करते हैं उनका बार-बार इम्तिहान लिया जाता रहे कि वे वाक़ई मुसलमान हैं या नहीं और वाक़ई इस अमली ज़िन्दगी में ख़ुदा के हुक्मों को पूरा करने के लिए मुस्तैद हैं या नहीं। अगर वे ख़ुदाई परेड का बिगुल सुनकर हिलते तक नहीं तो साफ़ मालूम हो जाता है कि वे इस्लाम की अमली ज़िन्दगी के लिए तैयार नहीं हैं। इसके बाद उनका ख़ुदा को मानना और रसूल को मानना बिलकुल बेमानी है। इसी लिए क़ुरआन में कहा गया है–

> "बेशक नमाज़ एक सख़्त मुश्किल काम है, मगर उन लोगों के लिए मुश्किल नहीं है जो डर रखते हैं।"
>
> (क़ुरआन, 2 : 45)

जो लोग ख़ुदा की बन्दगी और उसका हुक्म मानने के लिए तैयार नहीं हैं, सिर्फ़ उन्हीं को नमाज़ बोझ मालूम होती है। और जिसको नमाज़ बोझ मालूम हो, वह ख़ुद इस बात का सुबूत पेश करता है कि वह ख़ुदा की बन्दगी व इताअत के लिए तैयार नहीं है।

ख़ुदा का ख़ौफ़ पैदा करना

तीसरी चीज़ ख़ुदा का डर है जिसको हर वक़्त दिल में ताज़ा रखने की ज़रूरत है। मुसलमान इस्लाम के मुताबिक़ अमल कर ही नहीं सकता जब तक कि उसे यह यक़ीन न हो कि ख़ुदा हर वक़्त, हर जगह उसे देख रहा है। उसकी हर हरकत का ख़ुदा को इल्म है। ख़ुदा अँधेरे में भी उसको देखता है, ख़ुदा तनहाई में भी उसके साथ है। सारी दुनिया से छिप जाना मुमकिन है, मगर ख़ुदा से छिपना मुमकिन नहीं। सारी दुनिया की सज़ाओं से आदमी बच सकता है, मगर ख़ुदा की सज़ा से बचना नामुमकिन है। यही यक़ीन आदमी को ख़ुदा के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी से रोकता है। इसी यक़ीन के ज़ोर से वह हलाल और हराम की उन हदों का लिहाज़ रखने पर मजबूर हो जाता है जो अल्लाह ने ज़िन्दगी के मामलों में क़ायम की हैं। अगर यह यक़ीन कमज़ोर हो जाए तो मुसलमान सही मानों में मुसलमान की तरह ज़िन्दगी बसर कर ही नहीं सकता। इसी लिए अल्लाह ने दिन में पाँच वक़्त नमाज़ फ़र्ज़ की है ताकि वह इस यक़ीन को दिल में बार-बार मज़बूत करती रहे। इसी लिए क़ुरआन में ख़ुद अल्लाह ही ने नमाज़ की इस मस्लहत को बयान कर दिया—

"यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है।"

(क़ुरआन, 29:45)

इसकी वजह आप ग़ौर करके ख़ुद समझ सकते हैं। जैसे आप नमाज़ के लिए पाक होकर और वुज़ू करके आते हैं। अगर आप नापाक हों और नहाए बिना आ जाएँ या आपके कपड़े नापाक हों और उन्हीं को पहने हुए आ जाएँ या आपका वुज़ू न हो और आप यह कह दें कि मैं वुज़ू करके आया हूँ तो दुनिया में कौन आपको पकड़ सकता है? लेकिन आप ऐसा नहीं करते, क्यों? इसलिए कि

आपको यक़ीन है कि ख़ुदा से यह गुनाह छिप नहीं सकता। इसी तरह नमाज़ में जो चीज़ें धीरे से पढ़ी जाती हैं, अगर उनको आप न पढ़ें तो किसी को ख़बर नहीं हो सकती, मगर आप ऐसा कभी नहीं करते, यह किस लिए? इसी लिए कि आपको यक़ीन है कि ख़ुदा सब कुछ सुन रहा है और आपकी रगे-जाँ से भी ज़्यादा क़रीब है। इसी तरह आप जंगल में भी नमाज़ पढ़ते हैं, रात के अँधेरे में भी नमाज़ पढ़ते हैं, अपने घर में जब अकेले होते हैं उस वक़्त भी नमाज़ पढ़ते हैं, हालाँकि कोई आपको देखनेवाला नहीं होता और किसी को यह मालूम नहीं होता कि आपने नमाज़ नहीं पढ़ी है। इसकी वजह क्या है? यही कि आप छिपकर भी ख़ुदा के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने से डरते हैं और आपको यक़ीन है कि ख़ुदा से किसी जुर्म को छिपा पाना मुमकिन नहीं। इससे आप अन्दाज़ा कर सकते हैं कि नमाज़ किस तरह ख़ुदा का डर और उसके हाज़िर व नाज़िर, अलीम व ख़बीर होने का यक़ीन आदमी के दिल में बैठाती और ताज़ा करती रहती है। रात-दिन के चौबीस घण्टों में आप हर वक़्त ख़ुदा की बन्दगी और इबादत कैसे कर सकते हैं, जब तक कि यह डर और यह यक़ीन आपके दिल में ताज़ा न होता रहे। अगर इस चीज़ से आपका दिल ख़ाली हो तो कैसे मुमकिन है कि रात-दिन जो हज़ारों मामले आपको दुनिया में पेश आते हैं, उनमें आप ख़ुदा से डरकर नेकी पर क़ायम रहेंगे और बदी से बचेंगे।

क़ानूने-इलाही से वाक़फ़ियत

चौथी चीज़ जो ख़ुदा की इबादत के लिए सबसे ज़रूरी है वह यह है कि आप ख़ुदा के क़ानून से वाक़िफ़ हों। इसलिए कि अगर आपको क़ानून का इल्म ही न हो तो आप उसकी पाबन्दी कैसे कर सकते हैं? यह काम भी नमाज़ पूरा करती है। नमाज़ में क़ुरआन जो पढ़ा जाता है यह इसी लिए है कि रोज़ाना आप ख़ुदा के हुक्मों

और उसके क़ानूनों से वाक़िफ़ होते रहें। जुमा का खुतबा भी इसी लिए है कि आपको इस्लाम की तालीम का इल्म हो। जमाअत के साथ नमाज़ और जुमा से एक फ़ायदा यह भी है कि आलिम और अनपढ़ बार-बार एक जगह इकट्ठा होते रहें और लोगों को हमेशा ख़ुदा के हुक्मों से वाक़िफ़ होने का मौक़ा मिलता रहे। अब यह आपकी बदक़िस्मती है कि आप नमाज़ में जो कुछ पढ़ते हैं, उसे समझने की कोशिश नहीं करते। आपको जुमा के खुतबे भी ऐसे सुनाए जाते हैं जिनसे आपको इस्लाम का कोई इल्म हासिल नहीं होता, और नमाज़ की जमाअतों में आकर न आपके पढ़े-लिखे और दीन का इल्म रखनेवाले अपने अनपढ़ भाइयों को कुछ सिखाते हैं और न अनपढ़ अपने आलिम भाइयों से कुछ पूछते हैं। नमाज़ तो आपको इन सब फ़ायदों का मौक़ा देती है। आप ख़ुद फ़ायदा न उठाएँ तो नमाज़ का क्या क़ुसूर!

इजतिमाइयत की मश्क़

पाँचवी चीज़ यह है कि कोई मुसलमान ज़िन्दगी के इस हंगामे में अकेला न हो, बल्कि सब मुसलमान मिलकर एक मज़बूत जमाअत बनें और ख़ुदा की इबादत, यानी उसके हुक्मों की पाबन्दी करने और उसके क़ानून पर अमल करने और उसके क़ानून को दुनिया में जारी करने के लिए एक-दूसरे की मदद करें। आप जानते हैं कि दुनिया में एक तरफ़ मुसलमान, यानी ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बन्दे, हैं और दूसरी तरफ़ कुफ़्फ़ार, यानी ख़ुदा के नाफ़रमान बन्दे। रात-दिन फ़रमाँबरदारी और नाफ़रमानी के बीच कशमकश जारी है। नाफ़रमान ख़ुदा के क़ानून को तोड़ते हैं और उसके ख़िलाफ़ दुनिया में शैतानी क़ानूनों को चलाते हैं। उनके मुक़ाबले में अगर एक-एक मुसलमान तन्हा हो तो कामयाब नहीं हो सकता। ज़रूरत इसकी है कि ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बन्दे एकजुट होकर बग़ावत और नाफ़रमानी

का मुक़ाबला करें और ख़ुदा के क़ानून को लागू करें। यह इजतिमाई ताक़त पैदा करनेवाली चीज़, सारी चीज़ों से बढ़कर, नमाज़ है। पाँच वक़्त की जमाअत, फिर जुमा का बड़ा इजतिमा, फिर ईदों के इजतिमा, ये सब मिलकर मुसलमानों को एक मज़बूत दीवार की तरह बना देते हैं और उनमें वह भाईचारा और मेल-जोल पैदा कर देते हैं जो रोज़ाना की अमली ज़िन्दगी में मुसलमानों को एक-दूसरे का मददगार बनाने के लिए ज़रूरी है।



कुछ अन्य हिन्दी पुस्तकें

अच्छे लोग	इरफ़ान ख़लीली
इस्लाम आप से क्या चाहता है?	मौलाना सय्यद हामिद अली
इस्लाम और मानवाधिकार	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी
इस्लाम और सामाजिक न्याय	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
इस्लाम एक नज़र में	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही
इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
इस्लाम की बुनियादी बातें	मौलाना अब्दुल-हई
इस्लाम की बुनियादी तालीमात (ख़ुतबात मुकम्मल)	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
इस्लाम में जनसेवा	मौलाना मलिक हबीबुल्लाह क़ासमी
इस्लाम में पाकी और सफ़ाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
इस्लाम में मानवाधिकार	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
इस्लामी तालीमात	मौलाना सुलैमान क़ासमी
आख़िरत के अज़ाब से ख़ानदान को बचाइए	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी
अख़लाक़ी कहानियाँ-1,2,3,4	अफ़ज़ल हुसैन
क़ुरआन की बातें-1,2 (बच्चों के लिए)	सय्यद नज़र ज़ैदी
क़ुरआन मजीद की शिक्षाएँ	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
चालीस हदीसें	मौलाना सय्यद हामिद अली
ज़बान की हिफ़ाज़त	बिन्तुल-इस्लाम
जीवनी हज़रत मुहम्मद *(सल्ल.)*	मुहम्मद इनायतुल्लाह सुब्हानी
दुरूद व सलाम	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
नबी करीम *(सल्ल.)* की दुआएँ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

प्यारी माँ के नाम इस्लामी सन्देश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
प्यारे नबी ऐसे थे!	माइल ख़ैराबादी
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी
मुसलमान किसे कहते हैं?	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल-इस्लाम
रोज़ा और उसका असली मक़सद	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
सोचने की बातें	मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी *(रह.)*
सब्र और उसके फ़ायदे	बिन्तुल-इस्लाम
हीरे का जिगर	माइल ख़ैराबादी
हज और उसका तरीक़ा	मौलाना सय्यद हामिद अली
हदीस प्रभा (सफ़ीन-ए-नजात)	मौलाना जलील अहसन नदवी
हम ऐसी बनें!	माइल ख़ैराबादी

नोट : सम्पूर्ण पुस्तक सूची मुफ़्त मंगाएँ।